Krishna Nand [illegible] (1)
M.A II Sem's (1)

Krishna Nand [illegible] (2) Purposive Sampling
M.A II Sem's (1) (2) (continue)

सबसे बड़ा गुण सुगमता एवं सरलता है। इस प्रतिचयन तकनीक में शोधार्थी अपने शोध उद्देश्य के अनुरूप सहज ढंग से उपलब्ध जीव संख्या से प्रतिदर्श का चयन कर लेते हैं।

(ii) मितव्ययिता — उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन विधि में मितव्ययिता का गुण पाया जाता है। क्योंकि शोधार्थी अपने शोध परिकल्पना के अनुसार अपने आस-पास उपलब्ध जीव संख्या से प्रतिदर्श प्राप्त करते हैं। इससे इन्हें प्रतिदर्शों के लिए अधिक भाग दौड़ नहीं करनी पड़ती है। फलतः यात्रा व्यय के साथ-साथ समय तथा श्रम की भी बचत होती है। इस प्रकार यह प्रतिचयन तकनीक काफी मितव्ययी माना गया है।

(iii) उचित प्रतिनिधित्व :— इस प्रतिचयन तकनीक में प्रतिनिधित्व का गुण पाया जाता है। प्रतिचयन की इस विधि में इस बात को सुनिश्चित करना सबसे अधिक होता है कि इसमें उन सभी सदस्यों को सम्मिलित कर लिया जायेगा जो शोध अभिकल्प (Research Design) के लिए महत्वपूर्ण हैं। इस प्रकार की गारंटी किसी भी सम्भावना

Krishna Nand [illegible] Purposive Sampling
M.A II Sem (2) (continue)

या असंभाविता प्रतिदर्शन या प्रतिचयन में मिलने की संभावना नहीं के बराबर होती है।

सोद्देश्य प्रतिचयन के दोष या परिसीमाएँ-

उपर्युक्त गुणों या लाभों के बावजूद उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन तकनीक के कुछ दोष या परिसीमाएँ भी हैं।

(i) अन्य असंभाविता प्रतिदर्शन (non probability sampling) की तरह सोद्देश्य प्रतिदर्शन से प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण अनुमानिक सांख्यिकी से नहीं की जा सकती है। क्योंकि अनुमानिक सांख्यिकी के प्रयोग की एक पूर्वकल्पना यह होती है कि प्रतिदर्श का चयन यादृच्छिक ढंग से किया गया है। चूँकि उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन पूर्णतः यादृच्छिक मापदण्ड का नहीं होता है। इसलिए इस प्रकार से प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण अनुमानिक सांख्यिकी (inferential statistics) से संभव नहीं है।

(ii) उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन में प्रतिदर्श जनसंख्या का पूर्ण प्रतिनिधित्व ठीक-ठीक नहीं करता है, इसलिए इससे प्राप्त निष्कर्ष का सामान्यीकरण करना कुछ मनोविज्ञानियों द्वारा सही नहीं माना गया है।

Krishna Nand [struck] Sampling? Describe purposive sampling
M.A II Sem's (3) (continue)

(iii) कुछ शोधशील मनोविज्ञानियों द्वारा इस प्रतिचयन तकनीक की आलोचना इस लिए भी की जाती है कि इस प्रतिदर्श का प्रतिनिधिक होने के दावा का आधार शोधकर्त्ता का अति आत्मविश्वास है। परन्तु आलोचकों के मतानुसार इस तकनीक से प्राप्त प्रतिदर्श जनसंख्या का सही प्रतिनिधित्व कर पाने में सफल नहीं है।

(iv) कुछ आलोचकों का मानना है कि सही प्रशिक्षण के अभाव में शोधार्थी द्वारा चयनित प्रतिदर्श में कई प्रकार की कमी रह जाती है। फलतः अध्ययन दोषपूर्ण रह जाता है। कुछ अन्य आलोचकों का मत है कि इस तकनीक को प्रयोग में लाने के लिए शोधार्थी को व्यापक एवं गहन ज्ञान की आवश्यकता होती है। कभी-कभी इस विस्तृत जानकारी के अभाव में प्रतिचयन दोषयुक्त रहता है। फलस्वरूप प्राप्त परिणाम में विश्वसनीयता की कमी पाई जाती है।

उपर्युक्त आलोचनाओं के बावजूद यह तकनीक कम खर्चीली तथा कम श्रमसाध्य होने के कारण मनोविज्ञान के साथ-साथ अन्य सामाजिक विज्ञानों में काफी प्रचलित है। राजनीति विज्ञान तथा अर्थशास्त्र में इस प्रतिचयन प्रविधि का उपयोग बहुत अधिक प्रचलित है।

The End